

DPN 6419

Title : एकादशाह विधि EKĀDAŚAHA VIDHI

Run. No. 7144

Cat. No.

Micro. No.

Subject Ritual विधि

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. / New. / Maith. / New. / New. / Nep. /

Size in cms. 19.5 x 8

Folios 34 Lines (in a page) 7

✓
Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor दामोदर शर्मा / इअन अल्सप

Date: NS / SS / VS / KS 856

Ruler / place Damodara Sharma

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. : Iyan Alshop.

Material : palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

□ ॐ विष्णवे नमः ॥ ॥ एकादशाह विधि ॥ एवम लिहा वयाव शताब्दाति
वंध सिजो ~~सो~~ डाओ वयधे ॥ ॥ P.T. 0.

centimeter

5

10

15

साहंवाते पि वेलायां अन्त पो रलिं द्वा कृतं / नदी तोरे ज दातव्यं
इष्टात्प्रेत निहायनं ॥ इति ॥

सं. ८५६ वैशाख शु श्री दामोदर शर्मण लिखितं ॥

[illegible]

ॐ विष्णु वनमः ॥ ७ कादम्बर विधि ॥ खानलिहावयाव गुताजाति
 कथसिजाहाउवयकु ॥ वकनिक्त गुथिखाकु मरिक्त धर्षखाया
 ७ कादम्बर वियधूनकाउ. क्रिनर्मथतम्भनियरूयाय ॥ वलानिम्भया
 थंय्या आयालखाहानलियाय ॥ ॥ यतम्भनियरूविधिलिखित ॥
 सिकथमयाय ॥ घातवासनवाय नायहाल काठकलणन थडड
 लखत काठसिकवाहलमहितनत ॥ वलि (मरुजा मरुमस आदि
 नवजिहायानलयतसतय ॥ कभतम्भ १ धाविलिखित ॥ वंसायाउयू

जायाय ॥ कलभादि ॥ ॐ अयादि ॥ वायू ॥ मन्त्र (मरुति विदुवद
 न ७ कादम्बर कला मरुसातनार्थ यतम्भनियरूकर्मकेदु ॥ न्यायाय
 यागयूजा ॥ ॥ तताद्यावाचने ॥ ॐ तत्वायामीति ॥ इतिद्यावाचने ॥ ॐ ओ
 १ नानि ॥ गल ॥ ॐ गलनांवा ॥ वलि ॥ ॐ अमरुखाता ॥ मरुमस ॥ ॐ अ
 यं (मरु ॥ ॥ मरुगधलि तममाल यवतनन ॥ ॐ वाक्मरुस ॥ कीमा
 नी ॥ ॐ यगवाज ॥ धूयदीयादिसाग ॥ इति कलणयूजा ॥ ॥ ततोअ
 त्रिसाधन ॥ यातवासन यक्षवायाउ कासखलयसे यूवाकसिक्त ॥ ॥

गोकवानवाय इनयायुधन ॥ अमिर्कुरुलथ ॥ गयपीयासाद्ययाग
 मृजामयुजानं ॥ ॥ लखनदाय ॥ ॐ दवस्यवा ॥ कननयय ॥ ॐ यद
 वादव ॥ यनिसमृद्धन ॥ ॐ मानमाक ॥ ॐ यल यन ॥ ॐ वीवृळ ॥ ॐ य
 न ॥ ॐ गवायामि ॥ अयदो ॥ ॐ हिनयगक ॥ ॐ वयुयमनिधाय ॥ ॐ म
 दमयति ॥ वकधाय यदयन ॥ ॐ वीरुययम ॥ वीरियदयन ॥ ॐ दवस्य
 वाकमयन ॥ ॐ गजामि ॥ वकनत ॥ ॐ वीवृळ ॥ गुताजातिकथसित
 कसिस ॥ ॐ ॐ धाना ॥ सियतन ॥ ॐ मृगवस्तु ॥ वदनादिन कतन ॥

॥ ॐ अमिर्मृद्धा ॥ ॐ तालयाय ॥ ॐ यतानिस्तु यनसमृद्धमयु ॥ ॐ म
 यिगृहामय ॥ ममानयदाय ॥ ॐ कयानत्रिग ॥ यनिसवर्ग ॥ अमि
 यानाम ॥ ॐ वलरुदानयसाहा ॥ वकननयारुतिवियमालकसं ॥ ॥
 तेलारुतियुद्ध ॥ ॐ योऽगमकि ॥ ॥ गतमिलारुति ॥ गायधाल ॥ तिलारुति
 युद्ध ॥ ॥ यधकमकाय ॥ मतादाय ॥ ॐ कायुकायुत ॥ आरुतिधति
 वकनरुद्धमाल ॥ गदादाय ॥ ॐ वृद्धयतमति ॥ ॥ कायुका ॥ ॐ उदसाग ॥
 हामल ॥ ॐ तिलासिसाम ॥ वदाय ॥ ॐ नमायुमयय ॥ १ नय ॥ ॐ युतद्विष्ट

कालावदाय ॐ तव वाचा ॥ वाकदाय ॐ ॐ मानुदाय ॥ अयामान ॐ अ
 याय मेय किन्विद्य ॥ धलसि ॐ गन्नादवी ॥ अं वल रुल ॐ यागयागुदगध
 नासर्वतस्मादिग आधवतु ॥ अमृनिश्चय समनी विद्या ॥ खाहा ॥ वासि
 द्यासि ॥ ॐ तद्विष्णु ४ यनमं ॥ सर्वगंधा ॐ गन्धदायी ॥ माय ॐ कंयानधि
 ॥ नवून ॐ ॐ गुंलाहितन ॥ दूइ ॐ यय ४ यथिद्या ॥ कृष्णवा ॐ क ॐ कृष्ण
 ॥ धलदाय ॐ धृतेयुते ॥ काकसा ॐ हंयविष्ट ॥ वीहि ॐ ॐ मानुदाय ॥
 खानदाय ॥ नयणी ॥ २१ ॥ ॥ वलिपूजा ॥ ॐ नमो वल्लभाय ॥ ॥

यूनजानुति ॥ ॐ यजायतयखाहा ॥ ॐ मृष्टिकरुखाहा ॥ ॥ धतयागधनदा
 यधूनकाडा संक्षयं वीक्षाहतिविय ॥ ॥ संखाहति ॥ नाहा दग धवत ॥
 दन्नायातिसनायैविय ॥ नानिक यष्टिक ॥ यवधन्यादि ॥ वकननयु ॥ अया
 य ॥ ॐ संकते अग्ने ४ समिध ४ ॥ आर्मसांय ॥ ० त ॥ ॥ जायसाग ॥ ॐ मृष्टिदा
 यस्याति ॥ अग्नीवीद ४ ॥ ॐ धो ४ नानि ४ ॥ ॥ यरूकं सिविसंरुनयाय ॥ धा
 नलखुस वाचक वाय ॥ वलिआदिनसकतांकाय ॥ धर्मखदलानं कुरुक
 लनजाहाडा ॥ अवलान धा ४ सियाहलन लखनहास्यं पिहावन पिखा

लखता ॥ अर्नरु कल यलख ॥ उं योऽन्म कि ॥ ॥ इहा वय उं शुभ कय ॥
मोऽन्म ॥ लखा आदि नमाल कान किल ताय वं स (ये हा थ) र्म ता य माल
॥ इति यत नम कि यरु विधि ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ यत यरु धून का उ यष्टि क
हाम याय ॥ अत या न या स ॥ अनिलि या हा र्थ या य ॥ ता हा च कल हा
त ॥ वलि (म रु जा) आदि नमाल क वजिय वल नत ॥ ॥ उं अ या दि ॥
नम रु नि यि रु नू दं हा उ का द नम कला धा द सा ग ता र्थ यष्टि हाम क
रु नि ॥ या सा र्थ या ग यू जा त्मान र्व ॥ ॥ त मा दा वा च्च ने ॥ कल नम च्च ने ॥ वलि

आदिन इखायिखातयंयूजायाय ॥ धूयदीयजायकाग ॥ ॐ तिकलमचने ॥
 ॥ ॥ धनंलियरूयाठठ ॥ धलनघुतोरुतिविय ॥ घुतारुतियूयु ॥ ॥
 तका अकत कामलन तिलाकृतिवियमालकसं ॥ तिलाकृतियूयु ॥ ॐ
 शुभकं ॥ ॥ संख्याकृतिनाजा दल धदसु दलयातिरुठि नानिक
 यष्टिक ॥ यूयुकृति ॥ आसंसा ॥ साग ॥ यरूविसऊन ॥ ॥ अलिधक
 कायकमतनंजाका ॥ वत सिंधु खान कायमतव ॥ यरूनलिभूतया
 धाखायिनवाचकं ॥ धकलललंखनयिखालखं निभहाय इहावय वं

सत्यदाधायता ॥ विहावयाउ याखाकसशकलय ॥ ॥ सार्यकालन
 जाचलखाय ॥ ॥ धर्नेलिनिदाननकरकयाय ॥ ॥ ॐ नित्य
 कयहूविधिः समाक ॥ ॥ ॥ ॥ सुनिष्कया. कसिहामआवाय
 नयावक. धय कियहू धाय. जिमनहूकहू ॥ कमतन गादियहू
 याय ॥ धर्नेलि (न विवाह हामयाय. यवमयहूका. यवाहितन क्वात
 क ॥ ॥ सुनिष्कयामत जातावृत्तक. यवादीयाउ. यवमयकाय
 वलसहूवा ॥ ॥ ग्वालकायधूनकाउ. संध्या. दगुलियायहूवा ॥ ॥

१७ वसुधैवकुतुम्भक ॥ ॥ ततादादगदिवस वहिनांगला (न विवाह कर्कश ॥ स्वा
 लिनमाउहूय ॥ अग्निकुंडदडाउ कलनवाय ॥ वक्ता ताहाधनत ॥ अ
 हकलन सल यिनत गव ॥ यक्ष यक्षानी. श्री. लक्ष्मी नागद्य ॥ सगुलदि
 वहिहोनां न दिययनेवाय ॥ ग्वाल रंगसगुलयाथमत ॥ यहू मीठय
 या नैमृह्यकालस यक्षगयसाधिन ॥ ॥ यवाहितनयाय ॥ ॐ अयादि
 नन्ध्या (न गयजमानस्य यिहुनंदन (न विवाह कर्मकहुलीसूयायोधा
 २ ॥ ॐ आरुधू ॥ यय ॥ गुननमस्काव यासाधयागयूजा ॥ ॥ वलिविय ॥

ॐ नमो ब्रह्मणे ॥ ॐ गन्तव्यं ॥ ॐ श्रीं वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ ॐ यदुक्तं ॥ ॐ सर्वथा ॥
तथा वलिं ॥ ॐ २० ॥ ॐ श्रीं वलिं विष्णुं ॥ ॐ नमो ॥ ॥ नमो ॥
ॐ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ ॐ दधिपूजं ॥ ॐ इमां देवताय ॥ ॐ दधिको ॥ ॐ दधि
॥ ॐ नमो ॥ ॐ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ ॐ नमो ॥ ॐ यदुक्तं ॥ ॐ नमो ॥ ॐ यदुक्तं ॥ ॐ नमो ॥
॥ ॐ यदुक्तं ॥ ॐ नमो ॥ ॐ यदुक्तं ॥ ॐ नमो ॥ ॐ यदुक्तं ॥ ॐ नमो ॥ ॐ यदुक्तं ॥ ॐ नमो ॥
॥ ॐ यदुक्तं ॥ ॐ नमो ॥ ॐ यदुक्तं ॥ ॐ नमो ॥ ॐ यदुक्तं ॥ ॐ नमो ॥ ॐ यदुक्तं ॥ ॐ नमो ॥
॥ ॐ यदुक्तं ॥ ॐ नमो ॥ ॐ यदुक्तं ॥ ॐ नमो ॥ ॐ यदुक्तं ॥ ॐ नमो ॥ ॐ यदुक्तं ॥ ॐ नमो ॥

शिवबुलदेवताय २॥ ॐ नमो देवी ॥ मध्य ॥ ॐ वसु ॥ १२॥ ॐ वसु यज्ञाने ॥ ॥
 दक्षधामाय ग्राज्या १०॥ ॥ वृषविवद नमून सकलतां ॥ वाल ॥ ॐ मन्त्रयामि
 ममाय ॥ वंदनादियुजा ॥ ॐ जनयत्येवा ॥ सांग ॥ ॐ निर्मलाका ननुयाय
 ॥ स्ववा ॥ ॥ ॥ गमयति गयुजा ॥ वन्दनादि सांग ॥ ॥ यजमानस्य यश्च
 गयविय ॥ कृणतला हातस ॥ ॐ वाचक शुभमि ॥ पावनं ॥ ॐ मनसु आ
 यायतां ॥ माहूने ॥ ॐ वम (नयु रि ॥ मयु दलं ॥ कियाया कम्पया जानायु
 लकं कथन ॥ सखिसावनधूनक ॥ धर्नीलि कियाया कम्पन विखालखनि

१५
 १०
 ५
 ०
 स यश्च गद्यनहाय सकलिनं निगर्त ॥ धतधूनकाउसं ध्यायावक ॥ ॥
 निवृत्तायाय उरु कर्णत ॥ उं नमः कायश ॥ उं वीरुयश ॥ उं यशिकायश ॥
 उं त्वयविष्ट ॥ उं वस्त्राण ॥ उं वस्त्रयस्त्राण ॥ ॥ वीरिहाल ॥ उं वीरुयश ॥
 नवाहाल ॥ उं त्वयविष्ट ॥ अर्घ्यागु निवर्त्त स्ववला नं आहाउ कर्णनर्वय
 यः पुदक्षिणकमल ॥ उं वायुवाया हिवीतय दृताना रुश दातय ॥ यवि
 नानुदस्य धामस ॥ कलनयाहिर्नत ॥ ॥ नमयर्त्तिगयूजा ॥ उं नमः ॥
 रुवाय ॥ ॥ ॥ ॥ ततः ॥ कर्णिकर्मकृष्यात् ॥ वकनिस्त्रयायूनाहित

नयाय ॥ ॥ सुनिस्त्रयाकिमायाकम्नयाय ॥ ॥ उं अयादि ॥ पुनूनम
 स्त्रानयासाध्यागयूजा ॥ कर्णिकाकमल अमिस्त्रायनादिकृष्यात् ॥ ॥
 ततः ॥ कलनार्त्तिन ॥ उं तवायामि ॥ उं त्वमग्नेयुनि ॥ उं स्थानायुधि ॥ उं वत्वा
 वाविर्त्तिग ॥ उं दानादवी ॥ उं अमन्द ॥ उं वस्त्रयस्त्राण ॥ उं ॐ दं विष्णु ॥ उं
 नमः ॥ रुवाय ॥ उं अयायस ॥ ॥ अहकलनयूजा ॥ उं यूरुत ॥ उं ॐ
 दं विष्णु ॥ उं ॐ रावती ॥ उं दं वपुतो ॥ उं विष्णुयुक् ॥ उं दिवावा ॥ उं यत
 द्विष्णु ॥ उं विष्णुनवाट ॥ ॐ त्वहकलनयूजा ॥ ॥ उं मयमृषय ॥ ॥

१५ ॥ ॐ आ कृष्ण ॥ १० ॥ लाकपाल ॥ ॐ गतावसिन् १० ॥ यश्च लाकपाल ॥ ॐ
 गलनात्वा ॥ यं वक्त्रं ॥ ॐ मया जाता ॥ ॐ अश्वत्थामादि ॥ ॐ वाक्मलसः ॥
 ८ ॥ ॐ नमः यं यं ॥ गलनात्वा ॥ ॥ कलन ॥ ॐ अजिघ्रुकलन ॥ ॐ स्वस्ति
 न ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥
 ॐ दधिकाया ॥ गल ॥ ॐ गलनात्वा ॥ वलि ॥ ॐ नमावन्त ॥ ॐ नमः ॥ ॐ
 आर्य ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥
 १० ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥

५ ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥
 ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥
 ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥
 ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥
 ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥
 ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥
 ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥

[illegible]

दक्षिणं सायानं पूषादाययातं ॥ ॥ वरूहाम ॥ ॐ अग्नयस्वाहा ॥ ॐ नक्र
नायस्वाहा ॥ ॐ महश्चक्रायस्वाहा ॥ ॐ महादेवायस्वाहा ॥ ॐ स्कानवेस्वाहा ॥
ॐ निवायस्वाहा ॥ ॐ यगुयतयस्वाहा ॥ ॐ उभयस्वाहा ॥ ॐ नद्ययस्वाहा ॥
ॐ शुभकायस्वाहा ॥ ॐ श्रीगुवायस्वाहा ॥ ॐ वृक्षायस्वाहा ॥ ॐ श्रीगुनायस्वा
हा ॥ ॥ वरूहानदाय ॥ ॐ निवृहाम ॥ ॥ धनं लिख्याहम ॥ कर्मत
नदायक ॥ सिन्धू यादायकं दक्षिणं (थहाखं वरूहा कनहाम्ना सुवृ
नतं ॥ अयमयन दक्षिणं मुखनवानं ॥ ॐ पूषाम्ना (धुनं ४ पूषा
वा ॥

नदीं सुसर्वतः॥ यूषावाजः सनातनं नः स्वाहा॥ ॐ नमो नमि निह नम
 धमिह धृति निह स धृतिः स्वाहा॥ ॐ यस्तु नमः नमः मा नमः नमः नमः
 यन॥ नायस्थापमेमा सुदीधन स्वाहा॥ ॥ ॐ नमो नमः नमः नमः नमः
 अमो सन्तो यन्ता काय स्वाहा॥ ३॥ स्वधा लसमि नयं दाय॥ ॥ स्वकु सुम
 लार्थ मातु ह्य॥ धमातु ह्यव कनिष्ठा मत॥ ॥ सनिष्ठा क्रियाया क
 न्धमया रुक् १ लाहान सिय नावाय॥ ॐ नमो नमः नमः नमः नमः
 वाह॥ बंकुलिका लसमालमाय॥ धर्मवाज वस रुतुमावा खवस॥ ३

वकीवाय (थईन लिपुलवाय॥ ॥ सानिर्मकुनादि॥ ॐ नकाहर्ण॥ वलि॥
 ॐ अश्ववाव॥ अनिलाह नका॥ ॐ सकिनामिमीता॥ सगुल घृताहित नि
 विनत्वाय॥ गुह्याय॥ ॐ काण्डाकाण्डात्॥ कोल॥ ॐ दीर्घायुस्त्वा॥ मातुस व
 हलिस क्रिहस ३॥ कृणान नूनयाय॥ धिव स्वालसं॥ ॥ मानयावक अ
 एकलान थव २ वदन॥ यश्च नयन हाय॥ ॐ त्वमनेयुरिः॥ ॥ यूजा॥
 ॐ वृषकाय धर्म मूर्त्य रुदमास नं २॥ यूष्यं २॥ नतदाश्च न यादाय रुमाय
 वदन सगुनादि॥ साद्यं टनकावायक॥ ॐ रुखित॥ ॥ धमायाज वसगिपु
 मासायुजा॥ ॐ युधिवीमू र्थन व रुदमास नं २ यूष्यं यादायो दि १

लवायलकयास वतसिद्धन ॥ मासायाखालकयासवकवाय ॥ ॥
रुतिंशुयलालयतन ॥ उं गगानमिन्द ॥ सुगुननतवक ॥ उंदधिकावा
॥ ॥ उं उखियातकाया उगितवनलधन ॥ ह ॥ खाहा ॥ उं नम ॥ र्णरुवाय ॥
उं रुव ॥ खाहा ॥ उं ॥ दं विष्णु ॥ उं स्व ॥ खाहा ॥ उं वद्वयसूनी ॥ माउम वरु
लिस किशुस उलगतरुलतया उं नम ॥ दाय ॥ धूयदीय ॥ मरु आवति
यतिशो ॥ उं ह ॥ रुव ॥ खाहा ॥ उं मनाहति ॥ ॥ तता ॥ गगानावा ॥ नर्ण ॥ ध
माया ॥ उं ह ॥ गुयुग वनिद्वय अगि ॥ गगानावा ॥ मरु ॥ दाय ॥ माता ॥ समाखाता

गृहामिवत्सकन्याकां ॥ ॥ मासाया ॥ उं ॥ गेनमी इदिताकन्या दोहिगीरुग
वसुथा ॥ दोगीवेवसमदुमा ददामिवृषवसिका ॥ ॥ वायु ॥ कृष्णदतका
य ॥ उं ॥ गगानावा ॥ गति अन्ननदानन यिरु ॥ लिवलाक विष्णुलाक वद्वला
कयाकारुवीरु वृषराय ॥ र्मां र्मां दानं दातव्यं ॥ उं ददस्य ॥ ॥ कृष्णदाम
काया ॥ उं ॥ अय ॥ गगानावा ॥ दकस्य ॥ उं ॥ अयादि ॥ उं ॥ गगानावा ॥ गति अमक
नाम पतवमृक्ष्यर्थं सन्नेलाकसेयाकमसु असेवृषराय ॥ र्मां वसि
कां कन्यादानं उद्यमदं संपदद ॥ उं कादात् ॥ ॥ ततालाजाहामरुधिनो

नाथ नृपवल्लिकाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ यास्तू नृपदत्त ॥ सनाथ नृप
 वल्लिकाय नमः ॥ ४ ॥ ॐ यास्तू नृपदत्त ॥ सनाथ नृपवलि का
 यस्तू नमः ॥ ५ ॥ ॐ यास्तू नृपदत्त ॥ सनाथ नृपवलि कायस्तू न
 मः ॥ ६ ॥ धृय दीय ॥ अगुर्गंधादि ॥ ॥ धनमो याककागु ॥ ॐ यि
 तावतमाना यतिनभ्यानां संक्षेपिता इति गन्तव्याता ॥ ७ ॥ तद्वासाय (गवासा
 यनाय शोधसूयजासाय संवीर्याय ॥ ॐ वृथादिरुगवाधमं वदुष्यादय
 कीर्तित ॥ ८ ॥ वृत्तामिति मर्दं रुक्मा समीपदीपुसर्वदा ॥ अगुर्गंधादि ॥ ॥

सिमवृत्ता ३

धनं धनकाता नृपुत्यकालसमानं दद्यात् ॥ सायाक्रियातद्वादाता कालख
 नस्त्रियातदर्थं लंखनदाय ॥ ॐ समुद्रासिन रुक्माता वीदान ॥ १ ॥ र्ममथारु
 नरिमादादिसादा ॥ मानुतां नृप ॥ १ ॥ र्ममथारु नरिमादादिसादा वसु
 नसिद्रवसाधु ॥ र्ममथारु नरिमादादिसादा ॥ ॐ हि नृप वल्लुसिवय ॥ स
 विकायसूजातस्य पायसिनरु ॥ अगुर्गंधादि ॥ १ ॥ र्ममथारु नरिमादादिसादा
 रुक्मा ॥ ॐ यासावाजायाव नृपामदमथानृप अवयव्यं जतानां ॥ मधु
 धृत ॥ १ ॥ सूतयाग ॥ यावकासनयाय ॥ १ ॥ र्ममथारु नरिमादादिसादा
 रुक्मा ॥ ॐ यासादवादि विक

15
10
5
0
cmts. 5 10 15 20 25

शक्तिरुद्रयाञ्जनिकं वरुदारुवनि ॥ यायुधित्री ययस्य दकि लुक्ता आद्य
४ संस्थाना रुक्ता ॥ उं निव नमा वक्रुषाय न्याय ४ निवया तन्नाय ४ युषतर्त
तन्ना सद्य वली नम्र सदा रुक्ता म वासयि वया वलमा आ मिर्धत ४ ॥ उं व
षरु रुक्ता न ॥ उं विमोद गभ रू वन ध्व नका कीर्तु ताव ४ सवृया ४ स
वन्ना ॥ को न प्रमृष्ट ४ सुखं वयं तु नीता वयया दिरुय विमृक्ता ॥ उं नमा
गभय ४ निता मतीय ४ सोनरु यीय नवव ॥ नमा वक्रुषय ४ यविगाय ४
यविगीयानमानम ४ ॥ अरि सिं वन ॥ उं नन युवाने पुतिवा ददाति न

नकीरुकि प्रवध विथन ॥ ॥ मलुनकाग ॥ उं वृषाहिरुगवान्धर्म प्रेरु ४
यादयकीरुति ४ ॥ वृत्तमि तमर्द रुक्ता समानदी रुसर्वदा ॥ अगर्ग भादि ॥
॥ ॥ सायाक्रमयातदाका उल खनहाय ॥ उं याक्रु अन्त सूर्य नूवा दिवमा
तवकि वलि सि ४ ॥ तारिना अय सवोली नूव जनोयन सुधि ॥ उं यावा द
वा ४ सूर्य नूवा गभ सूर्य या नूव ४ ॥ उं दानी तारि ४ सवोली नूव नाध रुव
हस्यत ॥ उं नूव नाध दिवा क्रु लोष नूव ४ नाज सन सुधि ॥ नूव विष्णु
लूदषु मयि धदि नूवा नूवम् ॥ उं तवायामि ॥ आत्म सिं वन ॥ ॥ सायाय

ॐ सकलान्धियान्तराखनहाय ॥ ॐ स्वर्गदाम् ॥ स्वाहा ॥ ॐ स्वर्गक ॥ स्वाहा ॥ ॐ
 स्वर्गलोक ॥ स्वाहा ॥ ॐ स्वर्गप्रति ॥ स्वाहा ॥ ॐ स्वर्गसुख ॥ स्वाहा ॥ ॥ मायातद
 क्रिया विद्य ॥ निराव विद्य ॥ सावनूनक ॥ ॥ ॐ रुखिदत्त ॥ ॐ यतिवाददा
 ति ॥ ॐ समुद्रासिन रुसाना ॥ दानू ॥ ॐ र्मयाह वलिमावाहि स्वाहा मानूता
 सिमनूतांगल ॥ ॐ र्मयाह वलिमावाहि स्वाहा वसूयसि दूवसा ॥ ॐ र्म
 याह वलिमावाहि स्वाहा ॥ ॥ धनसक यथकाय ॥ अमिकं लुहायका ॥ ॥
 ॐ यूनदस्मा विष्णूय ॥ ॐ नूनक म्हिमान मानं अधीन ॥ ॥ नकयदी द्वि यदी

त्रियदी ॥ ॐ रुष्यदी मष्टा यदी ॥ ॐ वनानू पर्थता ॥ ॥ स्वाहा ॥ ॐ रुष्यसजायक ॥
 ॥ ॥ धनकलहामलदी ॥ ॐ डाडा दक्षिणदी ॥ ॐ ऊलभूयथयदी ॥ ॐ डाडा मा यद्वाय
 ॥ सायिमाचकैत ॥ ॥ क्रियातदी ॥ ॐ डाडा कतालसथून ॥ ॐ वेतवलीलघन ॥ ॐ
 यमदावमहाद्याव कृष्ण वेतवलीनदी ॥ ॐ तदुका म ॥ ॐ ययकुं ॥ ॐ यतमाददि
 वंगत ॥ ॐ ॐ लतथाऊन विसी ॥ ॐ महायायामहानदी ॥ ॐ तदुका म ॥ ॐ ययकुं ॥
 ॐ यतमाददि वंगत ॥ ॐ ॐ नन्वे ॥ ॐ गामेकस्य ॥ ॐ वृद्धेगमनसकयून ॥ ॐ घाव
 कामनया ॥ ॐ मिथून मूय ॥ ॐ ॐ यतचमूकिकामनया यावदीमावली

१५
 १०
 ५
 ०
 सखा तावकालवर्षसन्तलोकसंपादि कामावेतनलीनयनार्थं अमकना
 मासवर्षपाकारुवरु ॥ साधितयनं ॥ उंठुखिनां किंठुखासंयुक्तयन ॥
 ॥ ॥ थनमलविय ॥ कियोयाकं निमविय सखिसावनधूनक ॥ ॥ दकका
 रुविय ॥ उं नमं यवुयव ॥ उं यवु वक्रा रुलं विष्णु धूर्णु दवमं हं वन ॥ क
 खार्यं रुगवतीदवी यानमतद्विधीयत ॥ ॥ वयकलंककाय ॥ ॥ यजमा
 नकुम्भस्य यं गव्याविय वक्रकलनसखा रुलं खन अलिधकविय ॥ ॥ थन
 वकनिम्भसं तजानायालक ॥ लकवानरु वक ॥ दगुलियातवन ॥ ॥

थनसंखाकृतिआदिन विस्तर ॥ नमिकयोष्टिकयवधन्यादि घृतदीयवृत्ति
 काहामं ॥ वलियूजनुं पायष्टिकहामं ॥ ॥ ततः संयुक्तकृति ॥ आर्यसा
 मागादिधूनक ॥ कलनगणीवीदं ॥ यरु विस्तरुनं ॥ यदयं कालीनागध
 यिष्ठाय ॥ ॥ थनयजमानादि अलिधकविय निवर्णकिलनन वन्दन
 सिंहरु विय सगुलनतयमतउ ॥ अलीवीद ॥ यरु आनधिकन ॥ वहि
 दीर्वागदिस् आचार्यसं न समय द्यायाउ विस्तरुनयाय ॥ ॥ सखायामूमा
 लखनिम्भआदिं समकाय ॥ नयकृटि वयनथियक ॥ सिं वलनक ॥ ॥

ॐ इत्येतज्जाय विमलं महाशक्तनायधीमहि ॥ कनकसूर्यः ४६ वादयात ॥ श्रमज्जाया ॥

जातायूलकं रुनिष्कयाद्वाद्यं वाठधयाय ॥ ॥ वकनिष्कया लिखनं वा ॥
ठधजातायूलकं ॥

यद्दमासनं त्वया दीयतां ॥ नर्ववाश्च न. जलस्नान. दीनस्नान यं वा मृत
स्नान यनरुलस्नान. वन्दन सिद्धन. यक्षाय वीत अकृत यथ. रुल. य
कान्न. विष्टका. नैवय. धूय दीय. ॐ दं रुलति ॥ ॥ साग ॥ अस्मन्नेत्राग
नाजेष्ट पूजितं वैवस्वदा ॥ यतकालं वसं पृथ. हाटकं ध्वनमा मृत ॥
यमाय धर्मं राजाय मृत्युव वाक्कायव ॥ वैवस्वताय कालाय सर्वलाक
कथायव ॥ ओं नृवनाय नीलाय दक्षाय यवमहिने ॥ वृकोदनाय विना
य विष्णुकाय वैनमः ॥ हाटकं ध्वनदवस्य निर्व्ययूजाय वायल ॥ याता

यतां ॥ ॥ विंशत्युविन ॥ काकान्नमलघं व यश्चमृतवलिमृत ॥ ॥ दं
 विंशत्युदरु मदीयमयतिष्ठतां ॥ यथममृद्वादिसेमिद्वाययतायथ
 ताविंशं नमोत्तयादीयतां ॥ ॥ मिविकदतसा ॥ मरुगमिन्ने ॥ तरुविर्गु
 नमोत्तयादीयतां ॥ ॥ तिलादकंदयात ॥ विरुतिलादकार्यां तिलाया
 दकंदं यत ॥ तनविंशं तयादरुं निवलाकंसगकुति ॥ यथममृद्वादिसेमि
 द्वाययतायतिलादकार्यं तयादीयतां ॥ ॥ वंवाधन ॥ जलमान ॥ दीयमान
 पुनर्जलमान ॥ वन्दनसिंदूर यद्वायवीतादतयूथ रुल यकान्न विष्ट

का नेवय धूयदीय ॥ दंरुलति ॥ ॥ साग ॥ यत ॥ यितनवृयाणि माका
 र्थकर्मलविष्ट ॥ दल्लरुनरुतं कर्म स्वर्गगकुनिमानवा ॥ ॥ कविर्गुन
 गावन हाटकधनयागते ॥ ॥ वंविंशं तयादरुं निवलाकंसगकुति ॥ ॥
 यतविंशमलमानं यंवामृतनवृति ॥ गृक्कायुतयूथल विंशं वन
 मासुत ॥ यतविंशान्नविष्टे तसर्वविधियविष्टुमसु ॥ ॥ जिद्रुकुद्रु
 धरुगसकलयुथ ॥ ॥ रुद्रुकुद्रुलसा ॥ यतविंशमल धक्युनंग
 क ॥ ॥ वधूजं तनकविंश ॥ जलादकार्यं तयादीयतां ॥ दीनादका

र्द्यत्वादीयतां ॥ ॥ नरिं वधकाशक ॥ यकविश्वतनूयलवकं वि
 तनः स्मृता ॥ तसर्वरुकिमायां तु तिलायामधुमिलिता ॥ ॥ धिं रुसवनि
 सिय ॥ वक्रादकं त्वया दीयतां ॥ ॥ वक्रतदुहात क्रिथं कृयुधालन ॥ जि
 कृयाजिपूत ॥ पुताय यत धिं रुथा सूपीतं त्वया दीयतां ॥ ॥ कतन ॥ ॥
 धिं रुयवाय ॥ यायानि युन्ना निपुना कृतानि संहस्य यायानि दिवं नय
 कि ॥ यृतानि कृत्वा ऊलविंद्यातं कृगीनथी त्वं न वलीयया कि ॥ ॥ स्वाकृष
 याउमाउकृय ॥ क्रिथं याथथरुता ॥ ॥ निद्रयां निमवाय ॥ द्वितीयम्

खनासिकादि संसिद्धाय ॥ कृतीयं वक्र (अ) गादि संसिद्धाय ॥ वक्रुथे वा रुद्धयां
 गुलि संसिद्धाय ॥ यश्च भद्रदि नाति निर्गमदि संसिद्धाय ॥ यश्च यादद्वयां गु
 लि संसिद्धाय ॥ सकमसृग्भां यस्त्राद्यादि संसिद्धाय ॥ अश्च मत्ववनामादि सं
 सिद्धाय ॥ नवमसर्वीगं संसिद्धाय ॥ दशमं कृषियाणां दि संसिद्धाय ॥ ॥
 जिद्रुताया या नृथा नृवाय संकर्तादर्थ ॥ ॥ काकध्वानं धिं रुथ ॥ यद्रु
 वासनवाय ॥ तायहाल ॥ खंकाथ रुत्तालयमलाय ॥ ऊव खव निवया ॥
 ॥ ॥ कृणतिलनामर्न दयात् ॥ काकाय काक धिं रुसृय ॥ दमासर्न त्वया

दीयतां ॥ अनायान्नानिर्गुणस्य ॥ दमासनं त्वया दीयतां ॥ ॥ ज्ञातवाच्य ॥
 यमस्य यमदृतस्य वायसासिमहामुन ॥ सकृज्जन्मकृतं यायं वलिगृहीतवा
 यसा ॥ काकवलिं कथं नतलं विंशं त्वया दीयतां ॥ ॥ वेवस्वतकूलजा
 तो ह्येवमनोसज्जनाज्जना ॥ ॥ दं विंशं त्वया दक मकी यमूयतिष्ठतां ॥ ॥ अना
 वलिं विंशं कथं नतलं विंशं त्वया दीयतां ॥ ॥ तिलादक वंदन सिंदूवाक
 तयस्त्रायवीतयुष्य रुल यकान्न विष्टका नेवद्य धूयदीय ॥ ॥ दं रुल
 ति ॥ ॥ साग ॥ ॥ रुदवानुलवाययां याभ्यां नेमृत्तवायसा ॥ ॥ वायसायति

गृहीतुं ह्यमोसं तयिताकन ॥ नमिगुणं वनवत्पुण्यं स्ववर्णं वर्णमहिषा
 मनस्कं ॥ मध्वसुवृष्यं वनदीं यालिं गीधर्मनाजायनमावृत्तसो ॥ धर्म
 नाजसुवृष्यं अना नवृष्यं वनकिव ॥ नवर्कं पुतमदिष्टं अना नवृष्यं नमावृ
 त ॥ ॥ अगुर्गंधदि ॥ ॥ वथुदावृत्तकं ॥ ॥ जलयागादका वं त्वया दीयतां
 ॥ ॥ दीनयागादका वं त्वया दीयतां ॥ ॥ ॥ जलयागुर्गंधीनयागुर्गंधी कायव
 थुदावृत्तकं ॥ ॥ यकविद्युतवृष्यं वरुनं विनन ॥ स्मृता ॥ ॥ नयवृत्तकि
 मायारु तिलायामधूमिलिता ॥ ॥ वधादकं त्वया दीयतां ॥ ॥ कायवृत्त

१५
 १०
 ५
 ०
 ५
 १०
 १५
 २०
 २५
 ३०
 ३५
 ४०
 ४५
 ५०
 ५५
 ६०
 ६५
 ७०
 ७५
 ८०
 ८५
 ९०
 ९५
 १००
 १०५
 ११०
 ११५
 १२०
 १२५
 १३०
 १३५
 १४०
 १४५
 १५०
 १५५
 १६०
 १६५
 १७०
 १७५
 १८०
 १८५
 १९०
 १९५
 २००
 २०५
 २१०
 २१५
 २२०
 २२५
 २३०
 २३५
 २४०
 २४५
 २५०
 २५५
 २६०
 २६५
 २७०
 २७५
 २८०
 २८५
 २९०
 २९५
 ३००
 ३०५
 ३१०
 ३१५
 ३२०
 ३२५
 ३३०
 ३३५
 ३४०
 ३४५
 ३५०
 ३५५
 ३६०
 ३६५
 ३७०
 ३७५
 ३८०
 ३८५
 ३९०
 ३९५
 ४००
 ४०५
 ४१०
 ४१५
 ४२०
 ४२५
 ४३०
 ४३५
 ४४०
 ४४५
 ४५०
 ४५५
 ४६०
 ४६५
 ४७०
 ४७५
 ४८०
 ४८५
 ४९०
 ४९५
 ५००
 ५०५
 ५१०
 ५१५
 ५२०
 ५२५
 ५३०
 ५३५
 ५४०
 ५४५
 ५५०
 ५५५
 ५६०
 ५६५
 ५७०
 ५७५
 ५८०
 ५८५
 ५९०
 ५९५
 ६००
 ६०५
 ६१०
 ६१५
 ६२०
 ६२५
 ६३०
 ६३५
 ६४०
 ६४५
 ६५०
 ६५५
 ६६०
 ६६५
 ६७०
 ६७५
 ६८०
 ६८५
 ६९०
 ६९५
 ७००
 ७०५
 ७१०
 ७१५
 ७२०
 ७२५
 ७३०
 ७३५
 ७४०
 ७४५
 ७५०
 ७५५
 ७६०
 ७६५
 ७७०
 ७७५
 ७८०
 ७८५
 ७९०
 ७९५
 ८००
 ८०५
 ८१०
 ८१५
 ८२०
 ८२५
 ८३०
 ८३५
 ८४०
 ८४५
 ८५०
 ८५५
 ८६०
 ८६५
 ८७०
 ८७५
 ८८०
 ८८५
 ८९०
 ८९५
 ९००
 ९०५
 ९१०
 ९१५
 ९२०
 ९२५
 ९३०
 ९३५
 ९४०
 ९४५
 ९५०
 ९५५
 ९६०
 ९६५
 ९७०
 ९७५
 ९८०
 ९८५
 ९९०
 ९९५
 १०००

दुहावत ॥ काकाय काकविगुसुखासुपीतं त्वया दीयतां ॥ अनाय भनयि
 उरुस्यसुपीतं त्वया दीयतां ॥ कतन ॥ ॥ काकयिं उरुधिसत ॥ काख
 नका ॥ ॥ अनयिं उरुधिसत ॥ कीनया रंतय ॥ खिचानका ॥ ॥ खाथसया
 उमा उरुय ॥ माउसय याकायल कायलासधवति याउ रनका ॥ ॥
 वनका कुरु क्रिथया धैयिं उरुधिसत नका उ लेखकायल काताया उ कुरुत
 ॥ कायलास कोलवकन धकदिकाय उयतनयाय ॥ अनिलिनमा उ
 कुरुया उचाय ॥ ॥ सखायल सिदत ॥ कायला खूनचाय क रातनका

स३
 यका ॥ अमृतामलकाय ॥ गंगमृलिकानधूनका ॥ ॥ वसुस साइइनका
 या उविय ॥ लेखकायका ॥ तवलक वाइकाय सत लाहातिस ॥ ॥ काय
 लास लेख सुरुतय ॥ सुरुकाया उ अननगधिकिय ॥ ॥ सूर्यस
 सुरु लेख सखायल नका ॥ ॥ लेख कुरुवा सुरुतय जानका उ वाकल
 सखाकनकायका ॥ वाकल लेख जाययका ॥ ॥ नइनका सककनका ॥ वाक
 ल लेख जाययका सकसर्न ॥ ॥ वाकल लेख वतया उ लहिलावकु उय ॥ ॥
 दानसल सायविधि ॥ लेख वलिहालका ॥ निर्मकन ॥ अलयतिया लाख

नकयूवलन ॥ ॥ इइताहायवहनक यातताहायवहनक ॥ स्वा
नमालवाहालनखदीन ॥ ॥ मतहताहवानलाय ॥ नाहवायालविय
॥ यालनहुवाय ॥ सरुआनथियाय ॥ ॥ इइ वतधनाहायकीकुवाकन
हाय स्वानमालकृतिनक ॥ धनायकीउान वंसधहाम कुवाकनहाया
॥ याखाकसहाकलय गाहायकहायस्यंत ॥ खालसिय ॥ रुतिसिय ॥
मुखलाधन वाकगया नाजायाहलसा ॥ वलिनथिय धर्मयायसकता
॥ ॥ काहाकानमाल सायकूथन ॥ याल वहा खाले लाहा धननहु

वाय नासिय ॥ ॥ खकवा कर्कषुजा जलमान घृतमान दधिसमान जा
कत स्वनिम्नया धाकमानममाल ॥ वकनिम्न नाजायामाल धाकसा
नहाय मतविय ॥ धनलिन्नाय धवक लुक्कन स्वक्कन ॥ कर्कषाया ॥
धलरुटिसाय मतथिय ॥ धनमुखधधन ॥ ॥ नुइयाममाल मुख
लाधन ॥ ॥ वाकगनखरुटिलाय रुकहुसलि ॥ निद्र निखालमाल ॥
॥ ॥ नकादनाहयाविधि ॥ दिनलिवर्षाया ॥ खसिसरातवियहल
सा ॥ ॥ सिद्धिक धवायसदातिवाय रुदमासनउधतिहता ॥ ॥ नवीजल

स्नान ध्यामृगस्नान पुनर्जलस्नान वन्दन सिंदूर यश्चायवीत यूथ रुतं
 नेवय धूय दीय ॐ दं रुतति ॥ ॥ सा ॥ ॐ अमरे न्नीगना ॐ अ वृजितं
 वेव सर्वदा ॥ अतकाल वसं यूथ सिद्धि कश्चन न भो मुत ॥ अमर्गं धादि
 ॥ ॥ रागनला मा लायकं ॥ तिसि कवा सागकं ॥ रामलं वृयया वकं यं
 वनन लंगमसथूनकं ॥ रागनरायकं डरुन सावकं धरातखन
 ॥ काल वकं न विय समाल यावकं खलिविय मागुं यकं ॥ ॥ दूजा
 माय लासासतया ॥ अमकं गगयि तु नंदन मरु वाक्क लाय ॐ द

मासनं डयतिष्ठतां ॥ नवं रुसाघ वन्दन सिंदूर यश्चायवीत यूथ वम्मा
 दि विय अंगुलि आदि तिसा विय रुतसा ॥ वम्नन गयकं ॥ ॥ तामि
 वकं ॥ सि आदि कविजालं विय ॥ ॥ राविय लहिवकं ॥ यरुमानीला
 थियकं मतव ॥ मवून लहिवकं ॥ धूय दीय ॥ ॥ कूगनिल जल नर्सक
 ल्य ॥ ॐ अयद्यगवाना रुति ॥ ॐ अयादि ॥ लयां च वम्नयुक्तार्थं योरु
 वीणयनासनं ॥ कश्चकं चोरुनी ॥ ॐ व डम्मी वर्मगर्व धनं ॥ याद रुषल
 वम्नय डयानं कल्लधनं ॥ करुनं रुद्रयागं च यानयागं कमलुर्न ॥

चिपिनैकं

उकादलं वक्रं उर्वं तं गूलं यश्च नानिच ॥ खानयानश्च विविधं यक्षानं मुखला
धनं ॥ अमूकगण विरुद्धं विरुद्धं चानाम्न स्वनेलाकसं याकि कामना
र्थं महावाक्कलायुधमहं संयुद्धं ॥ ॥ दक्षिण. मुखगुह्य. खलिका
विय ॥ नकताये ॥ ॥ विरुद्धं चानाम्न निवद्धं वनं ॥ यूवाकं कृद्धं व
जि. धनं यथा धनं तय ॥ साधलि सादृष्टं धनं कस्मि. साध. खानादि ॥
॥ ॥ आसनं ॥ अमूकगण विरुद्धं यथमनुकादलं कलायुधं वि
जसनीयतिष्ठतां ॥ ॥ कायला कामनायादुजाय ॥ विरुद्धं चानाम्न ॥ वल

लविनं ॥ ॥ अमूकगण विरुद्धं यथमनुकादलं कलायुधं विरुद्धं
थानाम्नं नगुं विरुद्धं तस्मै उयतिष्ठतां ॥ ॥ उर्वं तिलादक चन्दन सिद्धं य
क्षीयवीतयुधं कल धृयदीय नैवय ॥ ॥ उर्वं कलति ॥ ॥ साध. उर्वं
यथमुखनिलय विरुद्धं चानाम्न निवासिनि ॥ अथमयायमानाना मह्यं उ
यतिष्ठतां ॥ कलायुधमनुयानि अहमकादलं दिन ॥ शयियासादिसंयुद्धं
उद्युक्तं यितनं वय ॥ संपूर्णं सर्वशानां सवीनसिद्धिकानं ॥ तनविं
द्वयादलं निवलाकमदीयतं ॥ अगुर्गंधादि ॥ ॥ कलहामलतं लंखका

याडा॥ अमृकगति. यिं उखसुनवासागवउ॥ ॥ कायलासतय। अयिं
उवायक॥ माउरूय॥ कवय॥ इति॥ कादलद्विधि॥ ॥ निगालव
नडाडा. क्रातिगगसकलयीनधूनक॥ कमतकुम्भया नमतडा॥ आधा
लमतिलादकविमाल॥ लिहाउयावन॥ ॥ जाकजिमकुवाकल ११ जा
थूय. कुलालयतसजाताय. कता ११ गीतर्यत धलिइइधलककिर्त॥ धत
तयाडा कागखलनआधालवय॥ हासिकथि कायदंयक. नलयानन. स्व
वाधल कूलिखाकयाय. वूमिसखाय. आधालखाय. कलकि कलुतमत

श्रुत्या मूलकलति वकनकति विकलति धनखाय ॥ कर्मतं तिलादकविय
 ॥ वाश्च ॥ अमूक (मग) विरुतिलादकार्ध उद्यतिष्ठतां ॥ ॥ यश्चाह मा गच्छय
 क्व वय लहिलाव ॥ धतिजायलखाय ॥ ॥ बालकूक्या वाश्च ॥ अमूक
 (मग) यश्मानस्य तां वृत्तगदल कलगा धनिकाम् कर्तुं ॥ धतिगालया
 ॥ ॥ अथनिगधल (यविधि) ॥ लनेष्टनं ललकश्च वृधं धनस्य निष्कर्तं ॥ ग
 तं दिनं न कर्तुं नुविधिं नुवि (लघतः) ॥ लनेष्टनवान् सामवान् वृधवान्
 धयावान् निगयिं नु (यमतः) ॥ ॥ या १ खलथ यं वनत् १ अगद्यव १ रि

घटिकनमाल ॥ लख ब्रह्मि त. मलानवल दक्षुमति ॥ ॥ अथ पूजाया यनिवया
 त्याखन ॥ ॐ कुरु कवचाय सदा निवाय ॐ दमासने डयतिष्ठतां ॥ १० ॥ जलस्रा
 न. यंचामृतस्रात पूनकूलस्रात यन्दन सिन्दूर यक्ष्मायवीत यष्य रुल धू
 यदीय ॥ ॐ दं रुलति ॥ ॥ साग ॥ ॐ कुरु कवचं यमकां मकवकुं निलाव
 नं ॥ यश्च दलकलासाधं पून कुरुनमासुत ॥ सर्वतीर्थमयी मूर्ति कुरुध
 नृतीयकं ॥ नमामि सततं रुद्रा सर्वजीवघ्नानन ॥ विधिविष्णु रुद्रन
 व विमूर्तिरुवता नर्ग ॥ ॥ अथ मानकाधिकावर्ण्य पुनमासि सदा निव ॥ अगुर्ग

आदि ॥ ॥ अथ विष्णुसर्पदयात ॥ अमृकान्तरु विरुद्रुद्रा द्वितीयकलाप्र
 ॐ दमासने डयतिष्ठतां ॥ १० ॥ तृतीयकला चतुर्थकला यश्चमकला
 यश्चकला सयमकला अश्चमकला नवमकला दशमकला एकादशक
 ला द्वादशकला त्रयादशकला यात्रा सिककला पुनमासिककला ॥ ॥
 विष्णुयागजाय ॥ अमृकान्तरु विरुद्रुद्रा द्वितीयकलाप्र ॐ १० ॥ विष्णु
 तस्मै डयतिष्ठतां ॥ १० ॥ तृतीयकलादि पुनमासिकाने विष्णुदयात ॥ ॥
 १० ॥ तिलादक वन्दन सिन्दूर यक्ष्मायवीत यष्य रुल धू यदीय ॥ ॐ दं रु

लनि॥ ॥ साग॥ उं यश्च दलकलाप्रदं विंशं दद्याच्चयानव॥ सर्वयायवि
 निर्मकः॥ निवलाकं सगच्छति॥ अंगगंधादि॥ ॥ कूं ससकतन॥ उं कूं रक
 धनसदागिव सस्मानवासा रुक्नु॥ ॥ विंशसकलतिलतालत॥ उं विं
 उमृक्ताययामि॥ ॥ वाक्कलं धाय॥ उं उक्ताययस्व॥ ॥ विंशदाय॥ उं
 सफयाधदलानव्यमृगः॥ कारं रुक्ननिनी॥ वकवाकोऽसवदीय॥ देसाः
 सनमिमानय॥ तं विजाताः॥ कूं रकं ग॥ वाक्कलं वदया नगः॥ वस्तिताह न
 मध्वानं धूर्यं तयः॥ वसीदथ॥ नयायां विरुद्रूयल स्वयभका रुक्ना देन॥

तंदद्यायूं उनीकादं मयतं नल गयात॥ समीयगुयमानन विंशं दद्याद्भया
 निव॥ उद्वनं सफ (मगाणी कलभका रुक्नं नतं॥ रुक्नु तीर्थनरः॥ स्रात्वा भू
 द्वादर्वं गदाधर्वं॥ आत्मानं तावयिष्यति दलपूवीन्दलानयवान्॥ ॥ लाहा
 तसितकं॥ अरुद्यताथेथास तयकलकुय॥ विंशवूयकं॥ माउरूया
 आवय॥ धकूरुगकरुकायय॥ निखानं॥ विंशवालानदाउ॥ विंशधया
 सवधनमाल॥ वाक्कलमाउरूयाउकुवय॥ ॥ रूतिषु विविंश विधिः॥
 ॥ मूलविंशकूरु सुर्थं धूयमाल॥ कूं वा लि विवा सतय लाकूरु॥

कालवकन क. गूलतान ॥ ॥ निर्मगुयहू नूविष्य दूवीकनिकते लके ॥ नि
 वानयसर्वदाया न्यायणीयुववर्द्धन ॥ स्नानार्थगुववदत्ता वृजाविघ्ननिवा
 नयत् ॥ सिद्धिलक्ष्मीसमायन सर्वविघ्नहर्षण ॥ ॥ यूनाहितसु धृतययमान ॥

दक्षिण

कैरवो घनयन

विंश

वययन

७	६	५
४	३	२
१	०	९
८	७	६

हिममाललाय

प्रजमानयन ॥

१ वतक घन ॥ ललानया ॥ दाटको घन
 जिह्या ॥ सिद्धिकं घन ॥ उकादलहया ॥
 घुलुक घन ॥ गोलकूक्या ॥ कौलक घन
 निनेयग्या ॥ ॥ धन महादव ॥ ॥

१ कंठाहावियवाय ॥ ॥ महावाकलपूजायाय विधिर्था ॥ ॥ अथवानाहया
 दि ॥ अथादि ॥ मानव (न) गुयजमानस्य मागुलादं न सुधमेकादशकला ॥
 द्व ॥ मालयां धारुनी खदाय विहित सुवर्ण निर्मितयतिमां कं वृकय वि
 वृता मूलवीयामुधधनयुक्तयता मां शुदन विमान याविकर्मा गयथा कं
 वृका यथा रुनीयां लाकवमूष्ठीर्ष यदको धर्य यथा कटिर्वधनं यादह
 घलवर्क कुशायानह सुवर्ण कृत निर्मिता गुलीयकं सुवर्ण रुक्मवलथो
 कनक निर्मित ले वयक मका सहितो कर्णरुघालो राजनकां थया ग म

१५
 १०
 दक्षिणमात्रमनयाः यथादृष्टं यथायानयाः धिरुल निमित्तदीयरां
 वन्दनं सिद्धं यथा राजानानि धिरुल निमित्तं हस्तपद्मालनरां नीध
 दनं तैलरां तामुकं वागो सद्विर्को नानाराजानां न्यसिद्यं गालि कर्तुं
 कुरु सगं वृत्तीं धनूषवर्मादि नानालां यंधानि (मे) रुतगमदिष
 क्तागमं सदिता नानायराग राजन दृष्टं कर्तुं कदनीरुल यक्तान रु
 लतां वृत्तादि नानायकवर्णानि मानवराग वीरजयया ननं रुमन्
 वर्माल संहता मिनी सदिताय सग्नलाक विष्णुलाक निवलाक संघाकि

५
 कामनार्थं अमृक (ग) गायामृक वंदाध्यायिन अमृकनामगमलि महावा
 क्तव्यं ताय (कु) मरु संयदद ॥ ॥ वाक्कलन इह माधिनक ॥ धतिधून
 काडा नकाडा नको दल्लह धिगुथ ॥ ॥ कटाकाया वाक् ॥ ॥
 १ सदितामननया दानविधि ॥ ॥ हवठवायधून काडा यूजायाय ॥ ॥
 मृगक वृत्तिमा विष्णु मूर्क्यं दमासनं ॥ ॥ यूर्यं ॥ ॥ १०० वादाद्य हस्तार्ध
 वन्दन यक्ताय वीत यूर्यं यदीय ॥ ॥ अगर्ग धादि ॥ ॥ कृष्ण कतजलमादा
 य ॥ अमृक (ग) गायामृकनाम ४ यतन्त्रविमृक्तिका मा विष्णुलाक यास्यर्थं नया

१५
 १०
 ५
 ०
 ५
 १०
 १५
 २०
 २५
 ३०
 ३५
 ४०
 ४५
 ५०
 ५५
 ६०
 ६५
 ७०
 ७५
 ८०
 ८५
 ९०
 ९५
 १००
 १०५
 ११०
 ११५
 १२०
 १२५
 १३०
 १३५
 १४०
 १४५
 १५०
 १५५
 १६०
 १६५
 १७०
 १७५
 १८०
 १८५
 १९०
 १९५
 २००
 २०५
 २१०
 २१५
 २२०
 २२५
 २३०
 २३५
 २४०
 २४५
 २५०
 २५५
 २६०
 २६५
 २७०
 २७५
 २८०
 २८५
 २९०
 २९५
 ३००
 ३०५
 ३१०
 ३१५
 ३२०
 ३२५
 ३३०
 ३३५
 ३४०
 ३४५
 ३५०
 ३५५
 ३६०
 ३६५
 ३७०
 ३७५
 ३८०
 ३८५
 ३९०
 ३९५
 ४००
 ४०५
 ४१०
 ४१५
 ४२०
 ४२५
 ४३०
 ४३५
 ४४०
 ४४५
 ४५०
 ४५५
 ४६०
 ४६५
 ४७०
 ४७५
 ४८०
 ४८५
 ४९०
 ४९५
 ५००
 ५०५
 ५१०
 ५१५
 ५२०
 ५२५
 ५३०
 ५३५
 ५४०
 ५४५
 ५५०
 ५५५
 ५६०
 ५६५
 ५७०
 ५७५
 ५८०
 ५८५
 ५९०
 ५९५
 ६००
 ६०५
 ६१०
 ६१५
 ६२०
 ६२५
 ६३०
 ६३५
 ६४०
 ६४५
 ६५०
 ६५५
 ६६०
 ६६५
 ६७०
 ६७५
 ६८०
 ६८५
 ६९०
 ६९५
 ७००
 ७०५
 ७१०
 ७१५
 ७२०
 ७२५
 ७३०
 ७३५
 ७४०
 ७४५
 ७५०
 ७५५
 ७६०
 ७६५
 ७७०
 ७७५
 ७८०
 ७८५
 ७९०
 ७९५
 ८००
 ८०५
 ८१०
 ८१५
 ८२०
 ८२५
 ८३०
 ८३५
 ८४०
 ८४५
 ८५०
 ८५५
 ८६०
 ८६५
 ८७०
 ८७५
 ८८०
 ८८५
 ८९०
 ८९५
 ९००
 ९०५
 ९१०
 ९१५
 ९२०
 ९२५
 ९३०
 ९३५
 ९४०
 ९४५
 ९५०
 ९५५
 ९६०
 ९६५
 ९७०
 ९७५
 ९८०
 ९८५
 ९९०
 ९९५
 १०००

दानं दातव्यं ॥ ॥ कूलतिलजलान्यादाय ॥ अथ (यतवानाह कल्या ॥ अथादि ॥
 अमृक (गमामकादलषां लघिं गमयिष्यीकनलण्ड ॥ ॐ मां हायां यात
 नीखदायनिमित्तं तसूवर्गुनेवितसलश्रीकविष्णुपतिमां सकं वृकोकनी
 ययनिवृतामूयधनं पुष्कयदाकादन विमानयनि कर्माज्ञं सवर्गालंका
 नवामवशजन कुशाया न द्विविधायकनलो ॥ समायतां कांनतामादि
 विनिर्मित नाना नूय विस्तीर्णमनयाग याकयाग म्हायु दककूरु नि य
 एकयदी दीधरुं वन्दन सिंदूरनादरुने तैलरुं धूप दीप नेवयरां

५
 १०
 १५
 २०
 २५
 ३०
 ३५
 ४०
 ४५
 ५०
 ५५
 ६०
 ६५
 ७०
 ७५
 ८०
 ८५
 ९०
 ९५
 १००
 १०५
 ११०
 ११५
 १२०
 १२५
 १३०
 १३५
 १४०
 १४५
 १५०
 १५५
 १६०
 १६५
 १७०
 १७५
 १८०
 १८५
 १९०
 १९५
 २००
 २०५
 २१०
 २१५
 २२०
 २२५
 २३०
 २३५
 २४०
 २४५
 २५०
 २५५
 २६०
 २६५
 २७०
 २७५
 २८०
 २८५
 २९०
 २९५
 ३००
 ३०५
 ३१०
 ३१५
 ३२०
 ३२५
 ३३०
 ३३५
 ३४०
 ३४५
 ३५०
 ३५५
 ३६०
 ३६५
 ३७०
 ३७५
 ३८०
 ३८५
 ३९०
 ३९५
 ४००
 ४०५
 ४१०
 ४१५
 ४२०
 ४२५
 ४३०
 ४३५
 ४४०
 ४४५
 ४५०
 ४५५
 ४६०
 ४६५
 ४७०
 ४७५
 ४८०
 ४८५
 ४९०
 ४९५
 ५००
 ५०५
 ५१०
 ५१५
 ५२०
 ५२५
 ५३०
 ५३५
 ५४०
 ५४५
 ५५०
 ५५५
 ५६०
 ५६५
 ५७०
 ५७५
 ५८०
 ५८५
 ५९०
 ५९५
 ६००
 ६०५
 ६१०
 ६१५
 ६२०
 ६२५
 ६३०
 ६३५
 ६४०
 ६४५
 ६५०
 ६५५
 ६६०
 ६६५
 ६७०
 ६७५
 ६८०
 ६८५
 ६९०
 ६९५
 ७००
 ७०५
 ७१०
 ७१५
 ७२०
 ७२५
 ७३०
 ७३५
 ७४०
 ७४५
 ७५०
 ७५५
 ७६०
 ७६५
 ७७०
 ७७५
 ७८०
 ७८५
 ७९०
 ७९५
 ८००
 ८०५
 ८१०
 ८१५
 ८२०
 ८२५
 ८३०
 ८३५
 ८४०
 ८४५
 ८५०
 ८५५
 ८६०
 ८६५
 ८७०
 ८७५
 ८८०
 ८८५
 ८९०
 ८९५
 ९००
 ९०५
 ९१०
 ९१५
 ९२०
 ९२५
 ९३०
 ९३५
 ९४०
 ९४५
 ९५०
 ९५५
 ९६०
 ९६५
 ९७०
 ९७५
 ९८०
 ९८५
 ९९०
 ९९५
 १०००

जदि दवात्रेनायक नर्त्त नानाविधलाहायूधययूकां गृहक्षुण्णमहिषा
 न्वष्टागमय हंसयश्रुलिकानि पुकसाविका कधानाथतां तां वृलरुलमाद
 कष्टुतखलु राश्रयक नर्त्तयतां घिमयथानाम् ॥ यतत्वं विमूक्ति वक्त्रलाक
 विष्णूलाक निवलाक पाश्र्थ मृग्यरु ॥ सामाथर्ववदिष्टा नाना (गमगुस्था वा
 क्कलाया नन्दिक नवावाय निवावाय सहितय सुखा हंसयदद ॥ ॥ वंन
 तालत ॥ उंका दान ॥ सूवर्गुदक्षिण ॥ नतकुया दान कतयतिष्ठार्थ ॥ ॥ दंदिन
 अमन्निदेव तं दक्षिणं संपदद ॥ ॥ साग ॥ पूर्या नव नानीया मृतयानि

निवयून॥ वक्रलेविष्णुत्रयाय नमः॥ धनमायु र्यति॥ प्रष्टुं ध
 र्मकामादि संपदं॥ दातावलरुतस्तुनं युतामादुदिवंगत॥ ॥ धनवाजन
 दायकं माल॥ लवकायवाक्कलयनिष्क॥ ॥ इति सहितासनदानवाच्यं॥
 ॥ नमः शिवाय॥ युतश्चाह कर्मविधि लिख्यत॥ ॥ यात्री नार्क॥ युतयिर्गुं
 वहिर्दद्यात्सुदुर्गं विवर्जितं॥ पागुदीर्घावरुं कृत्वा सुस्नात॥ सुसमाहित॥
 ॥ ॥ अग्निवाडवाच॥ ॥ अलितासकु रिर्वायि लार्कवायथ निरुतं॥ युथमं कि
 यतं दुर्गं तदद्यात्सुदलं क्रिकं॥ ॥ वृहस्पतिर्वाच॥ मृतयिर्गुं दुयुता नानदा

साकीरुयनरा॥ आत्मानं च तथायुतं यतनि ननककुर्वे॥ ॥ यमडवाच॥ युग
 वादिगुल्लदक्रा नावारुन विसर्जुनं॥ नामलग्नसुधर्मा वैव युतश्चाह विवर्जयत
 ॥ तता यजमाना मुक्ककल्लदक्षिण सिमुख निव॥ कथं दाकाय अयस्य आह
 वमुहत्वा युतकर्म कुर्यात्॥ ॥ काकध्नावावलेषाणां यंवा मृतय विवर्जितं॥ युत
 त्रयैरु सिद्धार्थ मंगयुर्गजायत॥ युथमं जायत मृद्धा द्वितीयं प्रगवर्जुषी॥
 तृतीयं नासिका कं० प्रगुर्थवास्तु जायत॥ यं वमं रुदयौ सिद्धं लक्ष्मं जानू विधीयत
 ॥ सकर्मपादमूलं च अक्षमं च वमं वच॥ नवमं लामखां वैव दलमं येतर्गवत्॥

॥ ताईयेचही नष्टु दिनविद्धि करं प्रसाद ॥ सविभु करं नंदु पीन्या ननी ववनं कुर्व ॥
 पितामाता वियलोच गुनूपेवतथः यम ॥ यावकं भान्नपू वकितावकृतकमूयत
 ॥ गातावा गाह्युगावा कामरूपा द्विवदण ॥ नखेदु नंद कर्कशं सन्नेर्षु वनका
 यथत ॥ घूतस्त्रा नंद कर्कशं विंश्यागं दत्तमधयत ॥ अस्त्रनरुसनाधेव अग्नि
 नापिदह युन ॥ धागीरुलं वसिदार्थ इवोवतिलत्तमय ॥ मृत्पयं मधुखा नंद
 सकनानंद कर्कशं ॥ धोतावनं रूपा नंद वसुवाथ उदा यथत ॥ धं वगया
 यरुलं व यविर्गकाया लमधनं ॥ कलवं धनमित्थ कं वाक्कलमपिधायनं ॥ मू
 र्थायाद्यं वदागं विषयं वयदकिणं ॥ तदमनमृ विपालं अंगुष्ठि यदाय
 पितामाता मृग नष्टु दत्तदिन ननः ॥ सर्वमूर्धु प्रकृवी गक दोयसु विखी विना ॥

यत ॥ वाक्कलां न पसादन अंगस्य विधीयत ॥ ॥ लेखनवाद्य विषयादद्वयं
यने रुक्मायां सृष्टवन्दत ॥ तयोयुष्मदलं वक्तुं सर्थे लघिन लघत ॥ ॥ आया
रुवल्भदा वय् निर्मिष्कुर्न दयानयि ॥ धावादेष्टतयीतीरु मृतकानयुर्मर्गलं ॥
आवम्य विधिवरुता मृतकोपुद्धिमाववत ॥ कर्थासास्ति मर्षयद्वधूयददय
निस्सर्ग ॥ आर्दववसलादीव रुनिवादकधवर्न ॥ आश्रवद्वनमावयस्यर्ग
नीलाददीयथा ॥ दधिस्नानं निवाद्यां मोननददयं सृष्टेत् ॥ निवृत्तौ वतक
मालिदयलस्यावलाकर्न ॥ सार्थकालयिवलायां अन्नधाटलिकाकर्त ॥ नदीती